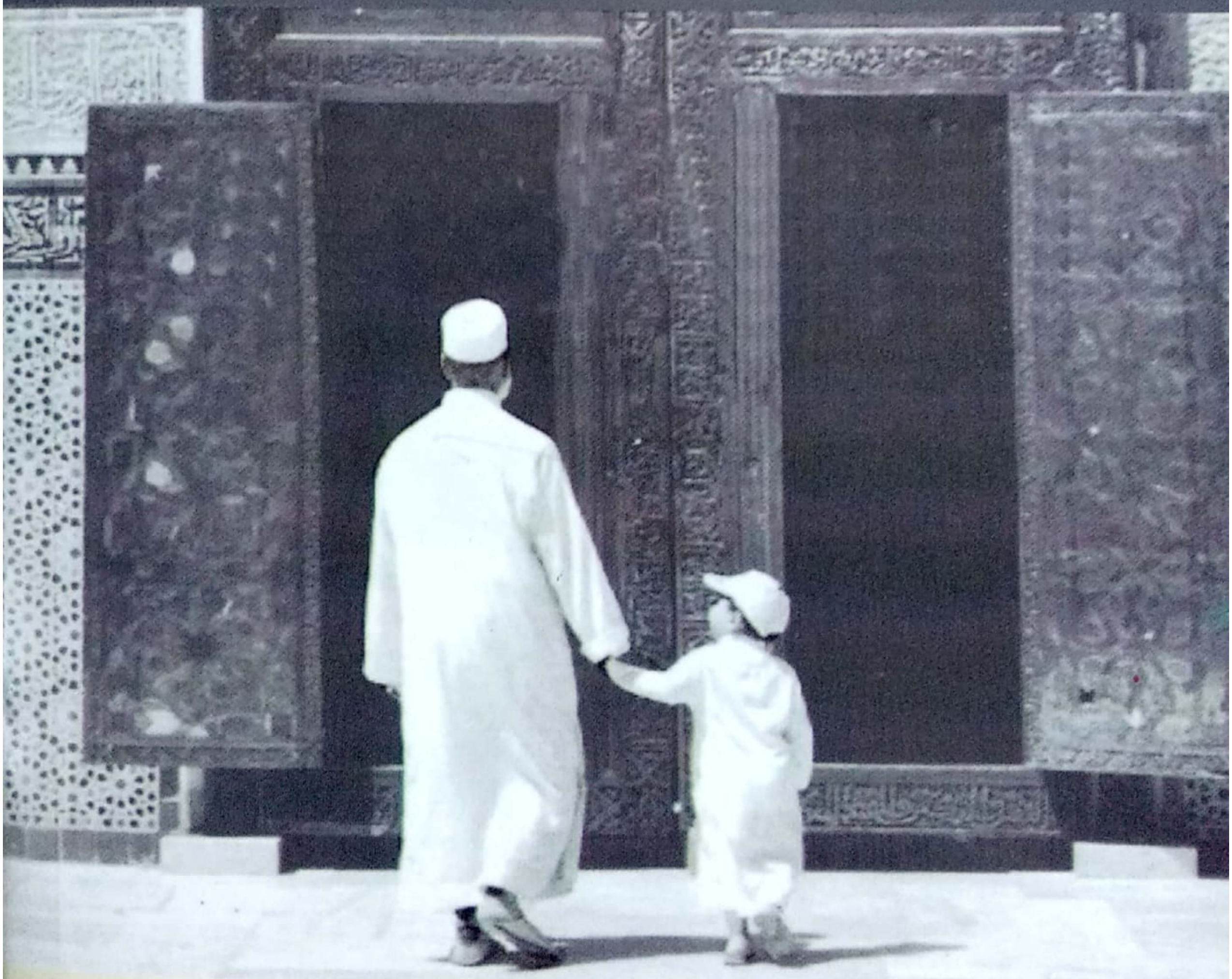
أَيُّهَا الْوَلَدُ

' AYYUHAL WALAD '

ऐ प्यारे बेटे



मुसन्निफ़ - हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुल्ला अलैहि

फलाह रिसर्च फाउण्डेशन

بسم الله الرحمن الرحيم

ऐ प्यारे बेटे !

(इमाम गज़ाली की नसीहतें

मुसन्निफ़

हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली

رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ (मु0 - 505 हि0)

नाशिर

फलाह रिसर्च फाउनडेशन (ब्रांच- बरेली शरीफ़)

ठिरिया निजावत खान मो0 8755455926

ब-फ़ैजाने हुजूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

नाम किताब : ऐ बेटे (अय्यो-हल-वलद)
मुसन्निफ़ : ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ
कम्पोज़िंग/मुतर्जिम : अरशदअली रज़वी
सहाहत : 52
सने इशाअत : सफरूल मुज़फ्फर1439 हिजरी/ नवम्बर 2017 ब मौक़ा 99वां उर्स रज़वी
तादाद : 1000
क़ीमत : 40/-
प्रिन्टर्स : यूनाईटेड प्रिन्टर्स, बरेली

किताब मिलने के पते-

1- फलाह रिसर्च फाउनडेशन, ब्रांच ठिरिया निजाबत खाँ बरेल शरीफ
मो0 8755455926, 9219083555

2- बरकाती किताब घर, इस्लामिया मार्केट बरेली शरीफ
मो0 8791340255

3- फलाह रिसर्च फाउण्डेशन, कानपुर (09026982627)

4-फतहुल्लाह नं0 1016, फर्स्ट मेन रोड, बैंगलूर

5- मदनी बुक स्टाल, क़ादरिया मस्जिद कॉम्पलैक्स, हुबली कर्नाटक

6- मकतबा इमाम आज़म 425/2 मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली
110006, (9958423551)

पेशे लफ्ज़

इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाह अलहैं) एक मशहूर आलीम-ए- दीन थे। उन्होंने शरीयत, तरीक़त, मारिफत के साथ साथ दूसरे बहुत से इस्लामी उलूम पर काफी किताबे लिखीं।

आपका लक़ब "हुज्जतुल इस्लाम" है। सन 505 हिज़री (1111 ईसवी में) आपका विसाल हुआ।

मौजूदा किताब दरअस्ल इमाम ग़ज़ाली का एक खत है। जिसमे उन्होंने तौबा, गफलत, गौर-व-फिक्र, नफ़्स की मुखालिफत और दूसरे उनवानात पर मशवरा तहरीर फ़रमाया है।

एक तालिबे इल्म इखलास, मेहनत व इबादत कैसे हासिल करें। इस पर भी मशवरा फ़रमाया गया है।

इमाम ग़ज़ाली की अस्ल अरबी किताब का नाम "अय्यूहल वल्द " है । इसका उर्दू तर्जुमा "बेटे को नसीहत" के नाम से मौलाना हज़रत मौलाना करीम सुलतानी साहब ने किया। जो पाकिस्तान से जमिअत ए इशाते अहले सुन्नत ने शाया हुई।

किताब की अहमियत को देखते हुए हमने इसका हिंदी में तर्जुमा किया है

अल्लाह तबारक वा ताआला से दुआ है हमारी इस अदना काविश को क़बूल फरमाये , और मज़ीद काम करने की तौफीक़ अता फरमाये – आमीन बिजाहि सय्येदिल मुरसालीन ﷺ

-अरशद अली रज़वी

7 अक्तूबर 2017

हुरुफ़े आग़ाज़

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सल्लल्लाहु अला हबीब सय्यदना मुहम्मद व आलेही व असहाबेही वस्सलम

हुज्जातुल इस्लाम हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमातुल्लाहि अलैय तारीख़ ए इस्लाम की वो अज़ीम शख़्सियत हैं जो मोहताज ए त'अर्रुफ़ नहीं। दीन ए इस्लाम की ख़िदमत के हवाले से आप का नामे गिरामी पूरी आब ओ ताब से चमक रहा है । हज़रत इमाम ग़ज़ाली का नाम मुबारक मोहम्मद बिन मोहम्मद ग़ज़ाली है। आप की विलादत व सआदत 450 हिजरी मे हुई । आप की विलादत जिला तूस के एक शहर तहरान मे हुई । आप ने अपनी इबततदाई तालीम अपने वतन मे हासिल की। ये मरहला आप की जिन्दगी का मुश्किल मरहला था क्योंकि आप के वालिद ए गिरामी का आप के बचपन मे इंतेक़ाल हो गया था । सिलसिलाए तालीम आप ने अपने अन्दरूनी जज़्बे से मुतास्सिर होकर शुरू किया ।

वह वक्त भी आया जब आप ने अपने वतन के मुरव्वजा उलूम हासिल कर लिये। लेकिन फिर भी आप का सीना मुबारक هل من مزید के नारे लगाता रहा। बिल आख़िर आप हसूले इल्म के लिए नेशापुर पहुंचे । नेशापुर मे आप के उस्तादे गिरामी इमामुल हरमैन आलिमे इस्लाम की नामवर इल्मी शख्सियत थे । आप ने इन से भरपूर इस्तिफ़ादा हासिल किया। बल्कि इल्मी ज़ौक़ की बिना पर अपने उस्ताद मोहतरम को अपना गुरबेदा बना लिया । उस्ताद मोहतरम इमामुल हरमैन के

इंतेक़ाल के बाद आप ने नेशापुर को ख़ैराबाद कह दिया । हज़रत इमाम ग़ज़ाली शाहे वक्त निज़ामुल मुल्क के दरबार पहुंचे। तो वहाँ सैकड़ो साहिबे इल्मो कमाल मौजूद थे । लेकिन आप इन मे अपनी इल्मी सलाहियत की बिना पर यूँ चमके जैसे तारो मे चौदहवी का चाँद चमकता है ।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमातुल्लाहि तआला अलैही 484 हिजरी मे बड़ी अज़मत व शान से सरज़मीने बग़दाद मे दाख़िल हुए । और मदरसा निजामिया की मसनदे तदरीस पर यूँ फाइज़ हु कि खुद मसनदे तदरीस आप पर फ़ख्र करने लगी। थोड़े ही दिनो के बाद आप का हलक़ाए असर इतना ज़्यादा हुआ कि सल्तनत के बड़े बड़े काम आप के मश्वारों* के बग़ैर सर अन्जाम ना पाते थे।

हज़रत इमाम गज़ाली अलैहि रहमा की बै'अत:

तमाम तज़किरा निग़ारों ने इस बात पर इत्तेफाक़ किया है कि आप ने आरिफ़ बिल्लाह हज़रत ख़्वाजा बू अली फारमदी अलै- हिर्रहमा के दस्त हक परस्त पर बै'अत की ये वह हज़रत हैं जिन की निगाहे कीमिया के असर ने ग़ज़ाली को क़ील-ओ-क़ाल के कुचे से निकाल कर इरफाने इलाही की दौलत से मालामाल कर दिया । इस अल्लाह वाले की निगाह ने ग़ज़ाली को वह सच्चा मोती बना दिया कि जो आज भी इस्लाम के गले मे पूरी आवो ताव से चमक रहा है ।

अल्लाह वाले की निगाह दिल व जान मे इन्क़लाब बरपा कर गई। क़ील-ओ-क़ाल की दुनिया बड़ी वसीअ है। लेकिन जब हकीकत की आँख खुली तो वह शाहेराह नज़र आयी जिस पर ""हुज़ूर ﷺ के क़दमैन

शरीफैन के अनवार चमक रहे थे। गजाली को ये मन्जर नजर आया कि क़ील-ओ-क़ाल की दुनिया एक धोखा नजर आयी। इसे छोड़ कर हक की तलाश मे निकल खड़े हुए। सालो साल तक इसी आलम में रहे। अब गजाली कतरा से समन्दर बन चुका था। जिस मे न खत्म होने वाले मोती व जवाहरात मौजूद थे। ज़र्रा से आफताब बन चुका था। जिस की नूर भरी किरने आलम को हयात दे रही थी। अलगर्ज दरबार रिसालत माअब ﷺ तक ऐसी रसाई हुई "'حضور ﷺ"' की दरबानी का ऐसा शर्फ मिला के शाहाने वक्त आप की गिरानी को तरस गए। हुज़ूर ﷺ ने जब "'हज़रत मूसा كليم الله عليه الصلوة والسلام"' को अपनी उम्मत के इल्म व कमाल से आगाह करना चाहा ، तो गजाली ही को पेश किया। इसी लिए "'शैख मुहिउद्दीन इब्ने अरबी رحمت الله تعالىٰ عليه ने इरशाद फरमाया कि इमाम गज़ाली को अल्लाह तआला ने सद्दीक़ीयत क़ुबर को मनसब अता फरमाया था। आखिर ये इस्लाम का नय्यरे ताबां 14 जमादि उ सानी 505 हिजरी को दाई अजल को लब्बैक कहता हुआ इस जहाने फानी से रुखसत हुआ। आप की यादगार आप की कोई औलादे नरीना ना थी। लेकिन इल्मी कुतुब की सूरत मे आप वह यादगार छोड़ गए कि रहती दूनिया तक आप का नाम रोशन रहेगा। आप की यादगार कुतुब मे इहया उल उलूम सरे फेहरिस्त है। इसे पढ़कर इन्सान को अपनी हक़ीक़त से आगाही होती है और उस की निगाहो के सामने उस का मक़्सदे तखलीक़ भी आ जाता है।

ये किताब दूनिया-ए-इस्लाम की बेनज़ीर किताब है

"अय्योहल वलद"

ज़ेरे नज़र किताब आप की जानिब से नसीहत पर मुश्तमिल है। किताब के मुतअला से मालूम होता है कि आप का कोई शागिर्द जिसे आप बच्चो की तरह चाहते थे और उसे बेटो से कम दर्जा ना देते थे। उस ने आप से नसीहतो की दरख्वास्त की और चन्द सवालात भी पूछे। आप ने

उन सवालात के जवाबात अपनी शान के मुताबिक दिए है। ये जवाबात आज भी उतने ही अहम है जितने कल थे।
इस रिसाला अय्यो हल वलद का आसान और सादा तर्जुमा कर दिया गया है।
शायद किसी भाई की इस मुबारक रिसाले पर नजर पढ़ जाए और अल्लाह तआला इस रिसाले की बरकत से इसे सिरात ए मुस्तकिम पर चलना नसीब कर दे तो ये मेरी बख्शीश व निजात का ज़रिया बन जाए।

وماتوفیقی الا باللہ العلی العظیم

وصلی اللہ علی حبیب سیدنا محمد والہ وسلم

```محمد کریم سلطانی```

जमीअत इशाअते अहले सुन्नत पाकिस्तान ज़ेर नजर किताब जो इमाम गज़ालि की तसनीफ़ है और जिस का आसान और सहल तर्जुमा अल्लामा व मौलाना करीम सुलतानी साहब ने फरमाया है को अपने सिलसिला मुफ्त इशाअत की 84 वी कड़ी के तौर पर पेश करने का शरफ हासिल कर रही है اللہ تبارک وتعالیٰ की बारगाहे जलालत मे दुआ है कि वह अपने हबीब पाक साहिबे लौलाक علیہ افضل الصلوۃ والسلام के सदंके व तुफैल हमारी इस क़ाबिश को कबूल व मन्जूर फरमाए और हमे हज़रत इमाम गज़ाली के नुक़ुशे पा पर गामज़न फरमाए और उन के फ़ुयूज़ व बरकात से हम सब सुन्नी मुसलमानो को मुतमअ फरमाए और उन की क़ब्रे अनवार पर करोड़ौ करोड़ रहमत व रिज़वान के फूलो की बारिशे फरमाए। नीज़ अल्लाह ताअला मुतर्जिम हज़रत अल्लामा मुहम्मद करीम सुल्तानी साहब की उम्र मे खैर व बरकत अता फरमाए और उन्हे यू ही तादेर मसलके हक अहले सुन्नत व जमाअत की खिदमत की तौफीक़ मरहमत फरमाए। ```آمین بجاہ سید المرسلین ﷺ```
```

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ बेटे !

अल्लाह् तआला अपनीं इताअत की तौफ़ीक के साथ आप की उम्र दराज करे और अपने प्यारो के रास्ते पर चलना नसीब करे।

· जान लीजिए !

मन्शूरे नसीहत तो मअदने(कान) रिसालत ﷺ से फैज़ ले कर लिखा जाता है। अगर आप के पास काने नबुवत ﷺ से पन्दो नसीहत पहुंच चुकी है। तो मेरी नसीहत की आप को क्या ज़रूरत। और अगर बारगाहे नबूत व रिसालत ﷺ से आप तक कोई पन्दो नसीहत नही पहुँची तो मुझे ये तो बताओ कि तुम ने उम्र के गुज़रे हुए सालो मे क्या हासिल किया है।

ऐ बेटे !

हुज़ूर ﷺ ने अपनी उम्मत को जो नसीहते फरमाई है उन मै से एक ये है:

"बन्दे का गैर मुफीद कामो मै मशगूल होना। इस बात की अलामत है कि अल्लाह् तआला ने उस से अपना रूखे अनवर फेर लिया है"।

जिस मकसद के लिए अल्लाह् तआला ने इन्सान को पैदा फरमाया है अगर उस की ज़िन्दगी का एक लम्हा उस मक़सद के अलावा गुज़र गया। तो वह उस बात का हक़दार है कि उस पर अरसा ए हसरत दराज़ कर दिया जाए।

"और जिस की उम्र चालीस बरस से तजावुज़(ज़्यादा) कर जाए और उसकी नेकी उस कि बुराई पर गलिब न आए। तो उसे आग(जहन्नम) मे जाने की तैयारी करनी चाहिए।

अह्ले इल्म व दानिश के लिए इतनी नसीहत **ही** काफी है।

जाने पिदर!

नसीहत करना आसान है और उस पर अमल करना मुश्किल है क्योंकि ख्वाहिशाते नफ्स के पैरो-कार का मिजाज़ कड़वा होता है।(और हक बात उसे कड़वी महसूस होती है।) जिन बातो के करने से अल्लाह ने मना फरमाया है। उसे इन बातो का करना बड़ा पसंद होता है। खसुसन वह आदमी इस मर्ज़ मे ज़्यादा गिरफ्तार है जो रस्मी उलूम का तालिब अपने नफ्स की शान बढ़ाने मे मशगूल और मनाक़ीबे दूनिया के हुसूल मे मगन है क्योंकि वह इस गुमाने फासिद मे मुब्तिला है कि सिर्फ इल्म का हुसूल उस की निजात और अज़ाबे इलाही से बचने के लिए काफी है और उसे शरीयते मुतहरा पर अमल की कोई ज़रूरत नही और ये एअतक़ादे फासिद फलसफा का अक़ीदा है।

सुब्हान अल्लाह ! उसे इतना भी इल्म नही कि जब उस ने इल्म हासिल किया और उस पर अमल न किया तो ये इल्म क़यामत के दिन उस के खिलाफ ज़बरदस्त हुज्जत होगा

जैसे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया:-कयामत के दिन लोगो मे उस आलिम को बहुत सख्त अज़ाब होगा। जिसने अपने इल्म से कुछ फायदा हासिल न किया।(यानि इल्म पर अमल न किया।)
हज़रत जुनैद बगदादी को विसाल मुबारक के बाद ख्वाब मे देखा गया और आप से पूछा गया - ऐ 'अबुल क़सिम ' बताइए कैसी बीती ?

आप ने इरशाद फरमाया!
"इबारतें काम न आई इशारात फानी महसूस हुए। हाँ रात की तन्हाइयों मे जो चन्द रकाअत नमाज़ तहज्जुद पड़ी थी। उन्होंने काम कर दिखाया।"

जाने पिदर!

अमाले सालेहा से तही दामन और अहवाल से खाली ना रहना और इस बात का यकीन रखना कि सिर्फ इल्म(अमल ए सालेह के बगैर) दस्तागीरी नही करेगा।

उस को इस मिसाल से समझे:
अगर एक आदमी जंगल मे हो और उस के पास दस अदद उम्दा तलवारें और दीगर असलह हो। वह आदमी शुजा और फुनूने हर्ब का माहिर हो। एक क़वी अलजशा और खौफनाक शेर उस पर हमला कर दे। तो तेरा किया ख्याल है कि इस्तेमाल व ज़रब के बगैर असलह की मौजूदगी उस को शेर के हमले से बचा सकती है ।

सुन लीजिए !
ये बात तो बस यही है कि असलह के इस्तेमाल व ज़र्ब के बगैर उस शेर के हमले से नही बचा जा सकता है। ऐसे ही अगर कोई आदमी एक हज़ार इल्मी मसाइल खुद पढ़े या उसे कोई पढ़ाये तो जब तक उस पर अमल नही करेगा। उसे कोई फायदा न होगा।

इस मसअले को एक और मिसाल से समझे: एक आदमी को तपश हो और वह सफरावी मर्ज मे मुब्तिला हो। उस का इलाज *सकनजबैन* और कशकाव से है तो जब तक वह उन का इस्तेमाल नही करेगा उस का मर्ज़ कैसे खत्म होगा।

ऐ जाने पिदर!

अगर तू सौ साल तक इल्म पढ़े और एक हजार किताबें अज़बर कर ले तो सुन ले जब तक तू उस इल्म पर अमल नही करेगा। अल्लाह की रहमत का मुस्तहक नही हो सकता।

अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है:

"और नही मिलता इन्सान को मगर वही कुछ जिस की वह कोशिश करता है।"

और अल्लाह तआला ये भी इरशाद फरमाता है:
"पस जो अपने रब से मुलाक़ात की आरज़ू रखता है इसे चाहिए कि वह अमले सालेह अख्तियार करे।"

अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है:

"ये जज़ा है उस कि जो वह दूनिया मे अमल किया करते थे।"

अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है:

"बेशक वह लोग जो इमान लाए और नेक अमल किये उन के लिए फिरदौस की जन्नते रिहायशगाहे होंगी हमेशा हमेशा रहेंगे उन मे और उन जन्नतो से पलट कर किसी और जगह जाना न चाहेंगे।

अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है:

मगर वह खुशनसीब जिस ने तौबा की और इमान की दौलत से सरफराज़ हुआ और अमले सालेह को इख्तियार किया(यही लोग जन्नत मे दाखिल होंगे।)
इन अहादीसे मुक़द्दिसा के बारे मे क्या ख्याल है?

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ो पर है:

(1) गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई इलाह नही और(हज़रत) (مصطفیٰ ﷺ) محمد अल्लाह के रसूल है।
(2) नमाज को तमाम हकूक से अदा करना।
(3) ज़कात अदा करना।
(4) रमज़ानुल मुबारक के रोजे रखना।
(5) जिसे हज़ की ताक़त हो उस का हज अदा करना।
ईमान ज़बान से इक़रार और दिल की तस्दीक़ का नाम है और अमल से ईमान मे क़ुव्वत व जिला पैदा होती है
आमाल की दलीले तो गिनती व शुमार से ज़्यादा हैं । अगरचे बन्दा अल्लाह तआला के फज़लो करम से जन्नत मे पहुंचेगा। लेकिन कब ? जब वह अपने आप को इस की मुसलसल इताअत व इबादत से रहमत व फज़ल का मुसतहक ठहरायेगा क्योंकि:
अल्लाह तआला की रहमत नेकोकारो के करीब है।

अगर ये कहा जाए कि सिर्फ ईमान के सबब जन्नत मे पहुंच जायेगा। हम जबाब में कहेंगे! हाँ! पहुंच तो जायेगा मगर कब ? कितनी मुश्किल घाटियां है जो इस रास्ते मे हायल है इन मुश्किल घाटियो मे पहली घाटी तो खुद ईमान की घाटी है।
ये डर तो हमेशा रहता है कि:

ज़िन्दगी की गुज़रगाह मे क्य वह ईमान के छिन जाने से महफ़ूज़ रहता है। अगर उस का ईमान महफ़ूज़ रह भी गया तो जब जन्नत मे जाएगा तो गरीब जन्नती कहलायेगा।
हज़रत ख्वाजा हसन बसरी ने इरशाद फरमाया

अल्लाह तआला कयामत के दिन फरमायेगा:
ऐ मेरे बन्दो! मेरी रहमत के सबब जन्नत मे दाखिल हो जाओ और अपने अपने आमाल के मुताबिक जन्नत तक़सीम कर लो।

ऐ जाने पिदर!

सुन ले जब तक तू अमल नही करेगा अजर नही पायेगा। बनी इस्राईल के एक आदमी ने अल्लाह तआला की सत्तर साल तक इबादत की। अल्लाह तआला ने इरादा फरमाया कि उस को फरिश्तो के सामने मज़ीद निखार दे। पस अल्लाह तआला ने एक फरिश्ते को उस की तरफ बागर्ज़े इम्तिहान भेजा और फरमाया कि ऐ फरिश्ते उस इबादत गुजार को कह दे कि तू इस तवील इबादत के बावजूद जन्नत का मुश्ताक़ नही है। जब फरिश्ता उस आबिद तक पहुँचा और अल्लाह का पैगाम पहुँचाया तो उस आबिद ने कहा- हमे इबादत के लिए पैदा किया गया है और हमे यही सजावार है कि हम उसकी इबादत करते रहे(बाकि

खालिक की मर्जी है जन्नत दे या न दे।) जब फरिश्ता अल्लाह की बारगाह मे वापस हाज़िर हुआ तो अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया मेरे बन्दे ने क्या कहा है?

फरिश्ते ने अर्ज़ कि

इलाही! जो उस ने जबाव दिया उसे तू बेहतर जानता है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया:

जब वह हमारा बन्दा किसी भी हालत मे हमारी इबादत से मुँह नही मोड़ता तो हम इस दर्जा लुतफो करम के बावजूद उस से कैसे एराज़ कर सकते है।

ऐ मेरे फरिश्तो! गवाह हो जाओ मैंने उस की मगफिरत फरमा दी है।

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया:

अपने नफ्सो का खुद हिसाब किया करो। क़ब्ल उस के कि तुम से हिसाब लिया जाए और आमाल का खुद वज़न किया करो क़ब्ल उस के आमाल तोले जाऐ।

हजरत अली ने इरशाद फरमाया:

जिस ने ये गुमान किया कि वह आमाले सालेह की मेहनत व मशक्कत के बगैर जन्नत मे पहुंच जाएगा। पस वह झूठी उम्मीदे बाँधने वाला है और जिस ने ये गुमान किया कि वह सिर्फ अपने आमाल की मशक्कत से जन्नत मे पहुंच जायेगा। तो पस वह अपने आप को अल्लाह की रहमत से मुस्तगनी समझ बैठा है।

हजरत हसन رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ का इरशादे गिरामी है:

अमले सालेह के बगैर जन्नत तलब करना बज़ाते खुद एक गुनाह है और गालिबन आप ही का इरशाद है:

तरीक़त व हक़ीक़त की अलामत:

"अमल पर इतराना तर्क करना है ، न कि अमल तर्क करना है।"

हुज़ूर ﷺ का इरशादे गिरामी है:

"दाना व बीना वह है जो अपने नफ्स का मुहासबा करे और मौत के बाद शुरू होने वाली जिंदगी के लिए अमल करे। और अहमक़ वह है जो अपने नफ्स को उस की ख्वाहिशात का गुलाम बना ले और अल्लाह पर झूठी उम्मीदे बाँधे।"

ऐ जाने पिदर!

कितनी ही राते तू ने तकरारे इल्म और मुताला ए कुतुब मे जाग कर गुज़ारे और उन रातो मे अपने नफ्स पर नींद को हराम करार दिया। मुझे मालूम नही इस का सबब क्या था?
अगर उन सब बेदारियो मे तेरी नियत मताअए दूनिया का हसूल और उस के साज़ व सामान पर कब्ज़ा करना। दूनिया के मनासिब और ओधो को पाना और अपने अरकान व अमशाल पर फख्र व मवाहात करना है।
तो तेरे लिए बर्बादी है तेरे लिए बर्बादी है।
और अगर
उन सब बेदारियो मे तेरी नियत

नबी करीम "ﷺ" की शरीयत का आहया अपने अखलाक व किरदार को नबी करीम ﷺ के अखलाक मे ढालना और नफ्से अम्मारा जो बुराई का हुक्म देता है। उस पर कडी चोट लगाना है तो तेरे लिए मुबारक है और तेरे लिए जन्नत का दरवाज़ा खुला है।

ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात के अलावा आँखो का जागते रहना बेकार है और तेरे अलावा किसी और के फिराक मे उन आँखो का रोना बातिल है।

ऐ जाने पिदर!

जैसे चाहे जिन्दगी गुजार ले लेकिन सुन ले एक दिन तुझे मरना है और जिस से चाहे मोहब्बत की पैंगे बड़ा ले। आखिर उस से जुदा होना है और जो चाहे अमल कर ले लेकिन सुन ले तुझे हर अमल की जज़ा मिलने वाली है।

ऐ जाने पिदर!

इल्मे कलाम व खिलाफ, इल्मे तिव व दबा इल्मे दीन व अशआर इल्मे नजूम व अरूज और इल्मे नह्व व सर्फ(जो तू ने दूनियावी फवायद और अपने हम मशरब अफराद से सिर्फ मुजादिला के लिए)हासिल किए।

तो बता
अल्लाह ذوالجلال والاکرام की मुखालफत करते हुए अपनी उम्र का क़ीमती हिस्सा बर्बाद करने के अलावा तुझे क्या हासिल हुआ!
मैने 'इंजील का मुतअला किया वहा लिखा हुआ पाया-
हजरत ईसा अलयहिस्सलाम ने इरशाद फरमाया:

मय्यत को जनाज़े की चारपाई पर रखने से लेकर उस के किनारे कब्र तक पहुंचने तक अल्लाह तआला अपनी अज़मत व जलाल से उस से चालीस सवाल करता है।

पहला सवाल :-

अल्लाह तआला फरमाता है - ऐ मेरे बन्दे!

तु मखलूक को हसीन नज़र आने के लिए अपना ज़ाहिर कितने साल संवारता रहा लेकिन जिस चीज पर मेरी नज़र होती है यानी दिल उसे तूने एक लम्हा भी पाक न किया।

ऐ इन्सान!

अल्लाह तआला हर रोज़ तेरे दिल को देखता है और फरमाता है-

तु मेरे गैर के लिए इतना आरास्ता होता है तुझे मेरे गैर से क्या सरोकार? तू तो मेरे खैरोकरम से मुकम्मल लिपटा हुआ है। क्या तू बहरा है अल्लाह के इस फरमान को नही सुनता।

ऐ जाने पिदर!

इल्म बगैर अमल के जुनून व दीवानगी है और अमल बगैर इल्म के कुछ भी नही गोश होश से सुन ले।

सिर्फ इल्म, दूनिया मे तुझे मअसी से दूर नही कर सकता और न ही तुझे इताअत व बन्दगी तक उठा कर ले जाता है इसी तरह सिर्फ रस्मी इल्म तुझे कयामत के रोज़ जहन्नुम की आग से नही बचा सकेगा। अगर आज तू ने अमल न किया और गुज़रे हुए दिनो का तदारक न किया तो कल कयामत के दिन कहता फिरेगा। हमे दूनिया मे वापस कर दे। हम अच्छे काम करेंगे तो जबाव कहा जायेगा।

ऐ बेवाक़ूफ ! तू वही से तो आ रहा है।

ऐ लख्ते जिगर!

अपनी रूह मे हिम्मत व ताकत पैदा कर और अपने नफ्स को(जो बदी का सर चश्मा है।) ज़ुअफ से दो चार कर और मौत को हर वक्त अपने बदन मे महसूस कर क्योंकि तेरी मंजिल कब्र है और कब्रिस्तान वाले हर लम्हा तेरा इन्तज़ार करते है कि तू कब उन के पास पहुँचेगा। खबरदार! खबरदार! कही उन के पास ज़ादे सफर के बगैर न पहुंच जाना।

हजरत سیدنا ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہٗ ने इरशाद फरमाया: ये जिस्म पिंजरे है परिन्दो के लिए (ऐसी रूहो के लिए जो हर लम्हा हज़िरे क़ुद्स की जानिब परवाज़ के लिए बेताब है) या ये जिस्म अस्तबल है। जानवरो के लिए(ऐसी रूहो के लिए जिन्होंने परवाज़ की सलाहियत को आज खुद खत्म कर दिया और अब वह डंगरो की तरह हर लम्हा चरने के लिए बेकरार है।)

बस ऐ इन्सान!
अपनी जात मे गौर कर उन दोनो से तु किस मे से है? अगर तू आलमे वाला की जानिब बेताब परवाज़ परिन्दो से है तो जब तू "अपने रब की तरफ लौट जा" की मसहूर कुन(आकर्षक) आवाज सुनेगा तो फौरन बुलन्दी की तरफ मह्व परवाज़ होगा यहां तक के तू जन्नतूल फिरदौस के बुलन्दो बाला बुर्जो पर आशियां नशी होगा।

जैसे हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया:

हज़रत सआद बिन माअज़ की मौत से अर्श ए रहमान फरहत व शादमानी से झूम उठा।
और अल्लाह की पनाह मांग कि तेरा शुमार जानवरो मे हो। जैसे

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया:

वह बदनसीब डंगरो जैसे हैं बल्कि उन से भी बदतर पस ऐसी सूरत मे बेखौफ न हो कि तुझे घर की चारदीवारी से जहन्नुम के तले मे जाना पड़ेगा।
हज़रत हसन बसरी رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बारगाह मे ठंडे पानी का मशरूब पेश किया गया पस जब आप ने प्याला पकड़ा तो आप पर गशी तारी हो गई । वह प्याला आप के दस्त ए मुबारक से नीचे गिर गया। जब आप को आफाक़ा हुआ तो आप से अर्ज़ की गई।
या अबा सईद आप को क्या हुआ।
फरमाया:

मुझे अहले नार की तमन्ना याद आ गई। जब वह अहले जन्नत से कहेंगे। थोड़ा सा पानी हमे भी दे दो और जो अल्लाह ने तुम्हे नेअमते दी है। उन मे से कुछ हमे भी दे दो।

ऐ लख्ते जिगर!

अगर सिर्फ रस्मी इल्म ही तुझे क़िफ़ायत कर जाता और अमल की तुझे अहतयाज न होती तो अल्लाह तआला की ये निदा सहरी के वक्त:

☆ है कोई सवाल करने वाला?

☆ है कोई गुनाहो से माफ़ी मांगने वाला?

☆ है कोई तौबा करने वाला?

फिज़ूल होती और उस का कोई फ़ायदा ना होता।
सहाबा کرام رضی اللہ تعالیٰ عنھم की एक जमाअत ने हुज़ूर ﷺ के सामने हज़रत अब्दुल्लह बिन उमर رضی اللہ عنھما का तज़किरा कर दिया तो हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया:
अगर वह रात को नमाज़े तहज्जुद अदा करे तो बहुत अच्छा आदमी है।
हुज़ूर ﷺ ने अपने असहाब मे एक आदमी से फरमाया!

ऐ फ़लां!
रात को ज़्यादा ना सोया करो क्योंकि रात को ज़्यादा सोना इन्सान को क़यामत के दिन फ़कीर बना देता है।

ऐ लख्ते जिगर!
रात को उठ कर नमाज़-ए-तहज्जुद अदा किया करो।
ये अमर है(अल्लाह का हुक्म है।)

वह खुशनसीब लोग सहरी के वक्त इस्तग़फ़ार करते है ये शुक्र है।
क्या कमाल लोग है सहरी के वक्त इस्तग़फ़ार करने वाले ये जिक्र है।

हुज़ूर "नबी करीम ﷺ" ने इरशाद फरमाया:

तीन आवाज़ों को अल्लाह तआला बड़ा महबूब रखता है:

(1) देक की आवाज(ये आवाज नमाज़ के लिए जगाती है।)
(2) उस आदमी की आवाज जो क़ुरान करीम की तिलावत करता है।
(3) सहरी के वक्त इस्तग़फ़ार की आवाज।

हजरत "'سفیان ثوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ'" फरमाते है:

बेशक अल्लाह तआला की तख़्लीक़ करदा एक ऐसी हवा है(जो दुनियावी हवा से मुख़्तल्फ़ है) सहरी के वक्त चलती है जिक्र ए इलाही और इस्तग़फ़ार को उठाकर बादशाह मुतल्क़ अल्लाह अलजब्बार की बारगाह मे पहुँचा देती है।

ये भी इरशाद फरमाया:
जब रात का पहला हिस्सा आता है। तो अरश-ए-इलाही के नीचे से एक निदा देने वाला निदा देता है।
खबरदार! इबादत गुजार खड़े हो जाऐ।
पस इबादत गुजार खड़े हो जाते है जितनी देर तक अल्लाह चाहता है इबादत करते रहते है।
जब आधी रात गुजर जाती है तो निदा देने वाला निदा देता है।
खबरदार! अताअत गुज़ार खड़े हो जाऐ।
पस अताअत गुज़ार अपने अपने बिस्तरो से उठते है और सहरी तक इबादत मे मशगूल है।
जब सहरी का वक्त आता है तो निदा देने वाला निदा देता है।
खबरदार! अब इस्तग़फ़ार करने वाले उठ खड़े हुए।
पस इस्तग़फ़ार करने वाले उठते है और इस्तग़फ़ार मे मशगूल हो जाते है।
पस जब फजर तलूए हो जाती है तो निदा देने वाला निदा देता है।
अब गाफ़िल खड़े हो जाएं।

पस गाफ़िल अपने बिस्तरो से यू उठते है जैसे मुर्दे अपनी कब्रो से निकलेंगे।

ऐ लख्ते जिगर!

हज़रत ""لقمان حکیم"" की वसीयतो मे है कि आप ने अपने बेटे को फरमाया:

ऐ मेरे प्यारे बेटे:

ऐसा ना हो कि मुर्गा तुझ से ज्यादा अक्लमंद साबित हो। वह तो सहरी को आवाज पर आवाज लगाए और तू नींद के मज़े ले रहा हो।

किसी शायर ने किया उम्दा कहा है:

रात की घड़ियो मे फ़ाख्ता शाख पर बैठी आवाज़ें लगा रही है और मैं ख्वाबे गफ़लत के मज़े ले रहा हूँ।

मुझे रब्बे काबा की क़सम! मैं अपने दावो मे झूठा हूँ अगर मै अल्लाह तआला का आशिक़े सादिक होता तो फ़ाख्ता रोने मे मुझ से सब्क़त ना ले जाती।

मुझे अपने बारे मे गुमान था कि मे अल्लाह से मुहब्बत करने वाला और उस के इश्क़ मै सौदाई हूँ लेकिन ये सारा गुमान फासिद है क्योंकि जानवर रोते है और मुझे रोना भी नही आता।

ऐ लख्ते जिगर!

इस सारी गुफ़्तगू का मदआ ये है कि तुझे मालूम हो जाए कि इबादत व इत़ाअत किया चीज़ है।

सुन लीजिए !

इत़ाअत व इबादत हुज़ूर ""نبی کریم ﷺ"" की अवामर व नवाही मे क़ौलो फेअल सेपैरवी करने को कहते है।

यानी:
जो कुछ तू कहे या जो कुछ तू करे या किसी वक़्त क़ौलो फेअल को तर्क करे तू ये सब कुछ शरीयत मुतहरा की इक़्तदा मे होना चाहिए।

मसलन:
अगर तू ईद के दिन या अय्यामे तशरीक़ को रोज़े रखे तो तू गुनाहगार होगा।
या तो ग़सब शुदा कपड़ो मे नमाज़ पढ़े अगरचा ये सूरत इबादत है फिर भी तू गुनाहगार होगा।

ऐ लख़्ते जिगर!
तेरा क़ौलो फेअल शरीयत मुतहरा के मवाफ़िक होना चाहिए क्योंकि इल्म हो या अमल जो """نبی کریم ﷺ""" की इक़्तदा के बगैर होगा। वह जलालत व गमराही है।
तेरे लिए ये भी ज़रूरी है कि तू जादह शरीयत से फिसले हुए सुफ़िया की शतहयात और उन की गुमराह कुन बातो के पीछे ना पड़े क्योंकि तरीकत के नूर भरे रास्ते का सुलूक मुजाहिदा और रियाज़त से ख्वाहिशाते नफ़्स को क़तअ करने और हवाऐ नफ़सानिया को बिल्कुल खत्म करने से है तामात और तरहात से नही है।

जान लीजिए कि!
लिसान मुतल्क़ और क़ल्ब मुतब्क का गफ़लत व शहवत से भरा होना शक़ावत व बदनसीबी की अलामत है जब तक नफ़्स की नफ़्सानियत को सिदक़ मुजाहिदा से खत्म नही करेगा। तेरा दिल अनवारए मअरफ़्त से ज़िन्दा नही होगा।

ये भी जान लीजिए की!

आप ने बाज़ ऐसे मसाइल मुझ से पूछे है जिन का जवाब ना तहरीरी तौर पर और ना ही ज़बानी तौर पर मुनासिब है। अगर आप इस हालत तक पहुँच गए तो खुद बखूदा इनका इरफ़ान नसीब होगा बसूरत दिगर उन का फ़अल मुहालात से है क्योंकि ये चीजे जौक़ि है और हर वह चीज जो जौक़ि है उसे जबान से बयान नही किया जा सकता। जैसे मीठी चीज की हलावत और कड़वी चीज की कड़वाहट को सिर्फ चख कर ही जाना जा सकता है।

ऐ बेटे!

आप के बाज़ मसाइल इसी क़बील से है लेकिन बाज़ मसाइल ऐसे भी है जिन का जवाब दिया जा सकता है और मैंने उन मसाइल को किताब "احیاء العلوم" वगैरह मे शरह व सब्त से जिक्र कर दिया है। यहाँ हम उन मे कुछ का ज़िक्र करते है और बाज़ की जानिब इशारा करते है पस हम कहते है।

सालिक पर चार चीज़े वाजिब है:

1- ऐत्काद-ए-सहीह जिस मे बिदअत का दख्ल ना हो।

2- तौबता-अल-नसूह इस तौबा के बाद ज़िल्लत की तरफ ना लौटे।

3- खस्म को भी इस हद तक राज़ी रखो यहाँ तक कि किसी का भी तुझ पर कोई हक़ बाक़ी ना रहे।

4- इल्मे शरीयत का हसूल उस हद तक कि तू इस के ज़रिए अल्लाह तआला के अहकाम अदा कर सके।

फिर:

उलूमे आखिरत मे से भी इतने हसिल हो जिन से निजात हो सके। हजरत "شیخ شبلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ" ने चार सौ उस्तादो की खिदमत की और आप ही का फरमान है कि

मैंने चार हज़ार अहादीस मुबारक पढ़ी। फिर मैंने उन मे से एक हदीस पाक को अख्तियार किया और उस पर अमल किया और बाक़ियों को छोड़ दिया क्योंकि मैंने उस हदीस पाक पर गौर व फक्र किया तो मैंने "عذاب الٰہی" से खलासी और अपनी निजात उस मे पाई इल्म अव्वलीन व आखिरीन सब का सब उस मे मन्दरज़ है पस मैंने उसी पर इक्तफ़ा किया और वह मुबारक हदीस ये है।

हुज़ूर "ﷺ" ने अपने बाज़ असहाब से फरमाया:
अपनी दूनिया के लिए इतना काम कर जितना तूने इसमे ठहरना है और अपनी आखिरत के लिए उतने अमल कर जितना तूने वहा रहना है और नेक आमाल अल्लाह के लिए इतने कर जितनी तुझे इस जात की एहतियाज है और आग के लिए उतने अमल कर जितना आग मे सब्र कर सकता है।

ऐ बेटे!

जब तू इस हदीस मुबारक पर अमल करेगा तो तुझे इल्म ए कसीर की ज़रूरत ही नही रहेगी।

एक और हिकायत मे गौर फिक्र कीजिए:

हजरत "हातिम رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ हज़रत शफीक़ बलखी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ " के असहाब मे से थे एक दिन "حضرت شقیق بلخی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ" ने आप से पूछा तू ने तीस साल मेरी सोहबत मे गुज़ारे इतने अर्से मे तूने क्या हासिल किया है? आप ने जबाव अर्ज़ किया! मैंने इल्म के आठ फ़वाइद हासिल किए है और ये फ़वाइद मेरे लिए काफ़ी है।
क्योंकि मै इनसे अज़ाब ए इलाही से अपनी निजात पाता हूँ।
हजरत "شفیق رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ" ने इरशाद फरमाया

वह कौन कौन से है?
हजरत "حاتم اصم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ" ने अर्ज की:

पहला फैइदा:

मै ने मखलूक को गहरी नज़र से देखा तो दिखाई दिया कि उनमे से हर एक का कोई न कोई महबूब व माशूक है जिस से वह मुहब्बत करता है और इश्क़ का दम भरता है। उन महबूबो मे कुछ मर्ज़-अल-मौत तक साथ देते है और उन मै से कुछ कब्र के किनारे तक साथ देते है। फिर हर एक वापस लौट आता है और उसे कब्र मे अकेला व तन्हा छोड़ आते हैं और उन मे से कोई भी उसके साथ कब्र मे नहीं जाता।
पस मैंने इस मसले मे खूब गौर फिक्र किया और मैंने अपने आप से कहा- बन्दे का अफ़जल बरतर महबूब वह है जो उस के साथ कब्र मे जाए वहाँ वहशत की घड़ी मे उस का मोनिस व गमख्वार हो तो मुझे सिवाए आमाल ए सालेह के और कोई नज़र नही आया तो पस मैंने आमाल सालेह को अपना महबूब बना लिया ताकि ये आमाले सालेह अंधेरी कब्र मे चराग का काम दे और मुझसे उन्स व मुहब्बत करे और मुझे तन्हा ना छोड़ दे।

दुसरा फायदा ;-
मैंने मखलूक को देखा कि वह अपनी अपनी ख्वाहिशात की पैरवी करते है और अपने नफ्स की मुराद को पूरा करने मे बड़ी तेज़ी से काम लेते है तो मैंने अल्लाह तआला के इस इरशाद ए गिरामी मे गौर ओ फिक्र किया:

"और लेकिन वह आदमी जो अल्लाह तआला की बारगाह मे पेश होने से डरता रहा.... और नफ्स को ख्वाहिशात से रोके रखा तो सुन लीजिए जन्नत उसकी आराम की जगह है।"

मुझे यकीन है क़ुरान हक और सच है तो मैंने फ़ौरन अपने नफ्स की मुखालफत शुरू कर दी और मै रियाज़त व मुजाहिदा की जानिब कमर बस्ता हो गया मैंने नफ्स को उस की ख्वाहिशात से अलग न होने दिया। यहाँ तक कि वह अल्लाह की इताअत व फ़रमां बरदारी पर सध गया और उसने अहकामे इलाही के सामने अपने सर को झुकाया और सच्चा मुतीअ व फ़रमांबरदार हो गया।

तीसरा फाइदा:

मैंने देखा हर एक आदमी दुनियावी साज़ व सामान को इकट्ठा करने मे मशगूल है। फिर उस सामान को अपने कब्ज़े मे ले कर रोके हुए है। पस मैंने अल्लाह तआला के इस इरशाद मुबारक पर गौर किया:

जो कुछ तुम्हारे पास है खत्म होने वाला है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है बाक़ी रहने वाला है। पस मैंने अपनी जमा शुदा पूँजी को अल्लाह के लिये खर्च कर दिया। पस उसे मसाकिन मे तक़सीम कर दिया ताकि ये मेरे लिए अल्लाह के यहाँ ज़खीरा हो जाऐ।

चौथा फाइदा

मैंने देखा बाज़ लोगो का गुमान है कि उन की शान व शौकत और इज्जत बुजुर्गी अक़वाम और क़बायल के बड़ा होने मे है। पस उन्होंने अपने आप को उनसे मनसूब करके मुअज़िज़ व मुकरर्म समझा।

बाज़ का गुमान ये है कि:

इज्जत व वक़ार माल व दौलत की फ़रावानी और औलाद की कसरत मे है पस इन्होंने उस वजह से अपने आप को काबिल ए फख्र समझा।

बाज़ का ये ख्यालए फासिद है कि:

इज्जत व शराफ़त लोगो का माल ग़स्ब करने उन पर ज़ुल्म ढाने और उन का खून बहाने मे है।

बाज़ का गुमान ये है कि :
इज़्ज़त व बुजुर्गी माल के ज़ाया करने और फ़िज़ूल खर्ची मे है लेकिन मैंने अल्लाह तआला के इस कौल पर गौरो फिक्र किया।
बेशक तुम सब मे मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम अल्लाह के यहाँ वह है
जो तुम मे सबसे ज्यादा तक़वा अख्तियार किए हुए है।

तो मैंने तक़वा इख्तियार किया और मुझे ये यक़ीने कामिल नसीब है कि क़ुरान करीम हक़ और सच है और लोगो के गुमान और नज़रीयात सब के सब बातिल व ज़ायल है ।

पांचवा फाइदा:
मैंने देखा कि -
लोग एक दूसरे की मज़म्मत करते हैं और एक दूसरे की गीबत मे सर गर्म रहते है मैंने उसकी वजह तलाश की तो मुझे पता चला कि उन सबकी असल हसद है। जो किसी के यहाँ माल व जाह और इल्म को देखकर पैदा होता है।
तो मैंने अल्लाह तआला के इरशाद मुबारक मे गौरो फिक्र किया
"हमने ही लोगो मे उन की मइशत को दूनियावी ज़िन्दगी मे तक़सीम किया है।"
तो मुझे मालूम हुआ कि माल व दौलत की तक़सीम अजल से अल्लाह की तरफ से है इस लिए मैं किसी से हसद नही करता और अल्लाह तआला की तक़सीम पर राज़ी व शाकिर हुं ।

छठा फाइदा -
मैंने देखा कि लोग एक दूसरे से दुश्मनी करते है...... किसी गर्ज़ और सबब की वजह से पस मैंने अल्लाह तआला के इरशादे गिरामी मे गौर फिक्र किया:

बेशक शैतान ही तुम्हारा दुश्मन है पस उसे दुश्मन जानो।
तो मुझे मालूम हो गया कि सिवाए शैतान के किसी से दुश्मनी जायज़ नही।

सातवां फाइदा -

मैंने देखा कि:

हर आदमी रोजी व मआश की तलाश मे बहुत ज़्यादा मेहनत करता है। इस तरह के मश्कूक और हराम माल भी हासिल कर लेता है। अपने आप को रूस्वा करता है और अपने हाथो अपनी क़दरो मंजिलत कम करता है तो मैंने अल्लाह तआला के इरशाद गिरामी मे ौर फिक्र किया रुए जमीन के हर जानवर का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मा है।

मुझे मालूम हुआ कि:

मेरा रिज़्क़ अल्लाह तआला पर है और उसने इसे अपने ज़िम्मा लिया है तो मै अल्लाह तआला की इबादत मे मशगूल हो गया और मा सिवा अल्लाह से अपनी तमन्ना मुन्क़तहा कर ली।

आठवां फाइदा -

मैंने देखा कि

लोगो मे से हर एक मखलूक मे से किसी न किसी पर भरोसा करता है।

☆ बाज़ दिरहम व दिनार पर

☆ बाज़ माल व सल्तनत पर

☆ बाज़ सनअत व हरफ़त पर

और बाज़ अपनी ही जैसी मखलूक़ पर भरोसा करते है

तो मैंने अल्लाह तआला के इरशाद पर गौर व फिक्र किया:

"और जो शख़्स अल्लाह तआला पर तवक़्क़ुल करता है तो वह अल्लाह उसके लिए काफ़ी है। बेशक अल्लाह तआला अपना काम पूरा फ़रमाने वाला है यकीनन अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अन्दाजा मुकर्रर कर रखा है। तो मैंने अल्लाह पर तवक़्क़ुल किया
वही मेरे लिए काफ़ी है और बेहतरीन कारसाज है"

उन फ़वायद को सुन कर ""حضرت خواجہ شقیق بلخی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ"" ने इरशाद फरमाया: (ऐ हातिम) अल्लाह तआला तुझे तौफ़ीक की दौलत से मालामाल करे।
मैंने तौरात व इन्जील، जबुर और क़ुरान मजीद को ब नज़्रे गायर देखा। तो मैंने उन चार मुकद्दस किताबो को इन ही आठ फ़वायद पर मुश्तमिल देखा। तो जिस ने उन आठ फ़वायद पर अमल किया उसने उन चार किताबो पर अमल कर लिया।

ऐ लख़्ते जिगर!

इन दोनो हिकायतो से मालूम हुआ कि तुम्हे बकसरत इल्म की जरूरत नही। अब मैं आप से बयान करता हूँ कि सालिक ए तरीक़ ए हक पर क्या उमूर वाजिब है।

सालिक को शैख की जरूरत है जो राहे हक़ बताने वाला और तरबीयत करने वाला हो ताके शैख़ ए कामिल सलिक कि तर्बियत के सबब बुरे अख़्लाक़ को निकाल दे और उस की जगह अच्छे अख़्लाक़ रख दे।
तरबीयत का मफ़हुम किसान के अमल से मुशाबहत रखता है।
किसान खेती बाड़ी के दौरान अपनी फसल से गैर जरूरी जड़ी बूटियाँ और काँटे चुनकर निकाल देता है ताकि उसकी फ़सल हसीन और पैदावार मुकम्मल हो। सालिक ए राहे हक के लिए एक शैखे कामिल का

होना ज़रूरी है जो उसकी दिल व जान से तरबीयत करे और वह रास्ता जो موصل الی اللہ हो उसकी रहनुमाई करे।
क्योंकि:

अल्लाह तआला ने रसूलों को इसके लिए भेजा था कि वह लोगो को अल्लाह तक पहुंचाने का रास्ता बतायें। तो जब सिलसिला ए रिसालत व नबूत खत्म हो गया और
आखिरी "رسول حضور ﷺ" इस जहान ए फानी को खैरबाद कह गए तो अल्लाह तआला ने उन की जगह उनके खुल्फ़ा-ए-राशदीन को उनका नायब मुकर्रर कर दिया ताकि वह लोगो को अल्लाह तआला की तरफ़. राहनुमाई करे।

अलामाते शैख:

वह शैख जो हुज़ूर ﷺ का नायब बनने की सलाहियत रखता हो उस के लिए शर्त है कि वह आलिम हो(यानि उस का सीना इल्म की दौलत से मालामाल हो) लेकिन ये बात भी याद रखना कि हर आलिम "नबी ﷺ" का नायब बनने की सलाहियत नही रखता।
अब मैं उस आलिम की बाज़ अलामत बतरीक़ इजमालन ज़िक्र करता हूँ ताकि उन मे से हर कोई ये दावा ना करे कि वह "मुर्शिद" है।
अब हम(अलामत ए शैख) बयान करते है:

☆ दुनिया की मोहब्बत और दुनिया के जाह व जलाल से मुहँ मोड़ने वाला हो वह खुद ऐसे शैख से बैअत हो जो नूरे बसीरत से मालामाल हो और उस का सिलसिला "हुज़ूर ﷺ" तक मुतस्सिल हो।
☆ कम खाना ,कम बोलना और कम सोना।

☆ नीज़ कसरते सलात कसरते सदक़ा और कसरते रोज़ा।

☆ इस दर्ज़ा रियाज़त व मुजाहिदा किया हो कि अपने नफ़्स को हालत ए अहसान मे ले आया हो।

☆ नूरे बसीरत से मामूर शैख ए कामिल कि इत्तेबा मे मुहासिन अख्लाक को तबीयत का जुज़ बना चुका हू।

वह मुहासिन अख्लाक:

☆सब्र ،नमाज ،शुक्र

☆ तवक़्क़ुल، यकीन ،सखावत

☆ क़नाअत، तमअसियत، नफ़्स

☆ हिल्म، तवाज़ेअ، इल्म

☆ सदक़ा ،हया ،वफ़ा

☆ तफ़क्कुर (अयाते क़ुरअनिया)

वगैरह है

पस जब शैख उन औसाफ़ से मुतस्सिफ हो गया

तो वो नबी "ﷺ" के अनवार मुबारक मे से एक नूर बन गया और अब वह उस क़ाबिल हो गया है कि उस की इक़्तदा की जा सके।

ऐसे शेख का पाया जाना बड़ा नादिर है और कबरीत अहमर से ज़्यादा अजीज अल वजूद है।

जिस खुशनसीब के लिए अजली सआदत मददगार बने और मज़कूरा वाला औसाफ़ से मुतस्सिफ शैख तक उस की रसाई हो जाए और शेख ए कामिल उसे क़बूल कर ले तो उस इरादत मन्द के लिए लाज़मी है कि उस शेख का ज़ाहिरन और बातिनन एहतराम करे।

ज़ाहिरी आदाब

ज़ाहरी आदाब ये हैं कि:

☆ शैख से बहस व मुजादला ना करे

☆ अगर इसका इल्मे नाक़िस बताए कि शैख से गलती हो रही है(तो अपने इल्म को गलत समझे) शैख की बात पर ऐतराज़ ना करे।

☆ शैख के सामने अपना सजदाह बिछाकर(अपनी पारसाई का इज़हार न करे बल्कि हमेशा अज्जर का पैकर नज़र आए) हाँ फर्ज नमाज़ के वक़्त अपना जाय नमाज़ बिछा सकता है और जब नमाज़ से फ़ारिग हो जाए तो जाय नमाज़ को फ़ौरन लपेट ले. शैख की मौजूदगी मे कसरतए नवाफ़िल का शगल ना करे(बल्कि सोहबते शैख को सबसे बड़ी सआदत जाने।)

☆ शैख जो हुक्म दे अपनी वुसअत व ताक़त के मुताबिक़ उस पर अमल करे।

बात़नी आदाब:

बात़नी एहतराम ये है कि:

☆ शैख से ज़ाहिरी तौर पर जो कुछ सुने या जो कुछ शैख से पेश आए......बातिन मे उस का हरगिज़ इन्कार ना करे चाहे शैख का कोई इरशाद मुबारक हो या अमल मुबारक वर्ना वह मुनाफ़िक़(त़रीकत)कहलाएगा।

☆ अगर वह ऐसा नही कर सकता तो उसके लिए बेहतर है कि वह शैख की सोहबत से किनारा कश हो जाए यहाँ तक कि उस का बात़िन उसके ज़ाहिर के मवाफ़िक हो जाए।

बुरी मजलिस से एहतराज़:

सालिक को चाहिए कि:
बद बातिन अफ़राद की मजलिस और उन की हम नशीनी से एहतराज़ करे ताकि क़ल्ब के बातनी हिस्से से शयातीन जिन व इन्स का तसल्लुत दूर कर दे और नहाँ खाना-ए-दिल को शैतानियत के असर से पाक व साफ़ करदे।
और सालिक को चाहिए कि:
हर हालत मे फक्र को मालदारी पर तरजीह दे

तसव्वुफ की दवाहम खस्लतें:

जान लीजिए!

तसूफ़ की दवाहम खस्लतें ये है

1- इस्तक़ामत
2- सकून मन - अल - नास

वह खुशनसीब जिस ने इस्तक़ामत इख्तियार की और लोगो से बर्ताव मे हुस्न खल्क का मुज़ाहिरा किया और उन के साथ हिल्म और बुर्दबारी से मुआमलात तय किए तो वह सूफ़ी है।
इस्तक़ामत ये है कि सालिक अपने नफ़्स की ख्वाहिश को क़ुर्बान कर दे अपने ही नफ़्स की(उख्रावी और दायमी) भलाई के लिए।
हुस्न खल्क.मा - अल - नास ये है कि –

लोगो को अपने नफ्स कि ख्वाहिशात व मुरादात पर न चलाए बल्कि अपने नफ़्स से अनानियत उस दर्ज़ा खत्म करदे कि वह लोगो की मुरादात पर चले जब तक वह खिलाफ़ ए शरअ उमूर सर अन्जाम ना दे(अगर वह शरीयत के खिलाफ़ चले तो अपना रास्ता उन से जुदा करे)

उबुदियत:

फिर तूने मुझसे उबुदियत के बारे मे सवाल किया सुन लीजिए !

उबुदियत तीन चीजे है।

1- शरई उमूर की मुहाफ़ज़त।

2- क़ज़ा-ए-कदर और अल्लाह तआला की तक़सीम पर राज़ी रहना।

3- अल्लाह तआला की रज़ा की तलब मे अपने नफ़्स की रज़ा को तर्क कर देना।

तवक़्क़ुल -

तूने मुझसे तवक्कुल के बारे मे पूछा है:

सुन लीजिए!

तवक्कुल ये है कि

अल्लाह तआला ने जो तुझसे वादा फ़रमाया है उस पर तेरा एतक़ाद व यक़ीन पुख्ता हो।

यानी - तु उस बात पर एतक़ाद रखे कि

अल्लाह तआला ने जो कुछ तेरे मुकद्दर मे लिखा है वह ला मुहाल तुझे पहुँचेगा अगरचे इस आलम ए रंग बु का हर फर्द उसको तुझ से दूर करना चाहे। और जो तेरे लिए नही लिखा वह हरगिज़ तुझ तक नही पहुंचेगा अगरचे सारा जहाँ उसे तुझे देने के लिए कोशां रहे।

इख्लास:

तूने मुझसे इख्लास के बारे मे पूछा है!

सुन लीजिए इख्लास ये है कि तेरे सारे आमाल अल्लाह तआला के लिए हो और लोगो की तारीफ़ व तौसीफ़ से तेरा नफ़्स राहत महसूस न करे और तेरे नफ़्स को लोगो की मज़म्म्त व बुराई की भी परवाह न हो।

जान लीजिए!

रियाकारी लोगो की ताज़ीम व तौक़ीर करने से पैदा होती है।

उस का इलाज ये है कि

तु लोगो को क़ुदरत की जंजीरो मे मुक़य्य्द देखे और तू गुमान करे कि उन्हे जमादात की तरह राहत या मशक्कत पहुचाने की कोई क़ुदरत व ताक़त नहीं है।

ऐसा गुमान करने से तू लोगो की नज़रो के बद-असरात से महफ़ूज़ रहेगा और जब तक तू उन्हे क़ुदरत व इरादा वाला गुमान करता रहेगा उस वक्त तक तुझ से दिखलावा और रियाकारी जैसी क़बी बीमारी दूर नही हो सकती।

ऐ लख्ते जिगर!

तेरे बाज़ सवालो के जवाबात मेरी तसनीफ़ात मे लिखे हुए है उन्हे वहा से हासिल कर लो और बाज़ का लिखना हराम है ।

जितना तेरे पास इल्म है उस पर अमल करो ताकि जिस चीज का तुझे इल्म नही वह तुझ पर मुन्कशफ़ हो जाए।

हुज़ूर "ﷺ" ने इरशाद फरमाया :

जिस ने अपने इल्म पर अमल किया अल्लाह तआला उसे ऐसे इल्म का वारिस बनायेगा जो वह पहले ना जानता था।

ऐ लख्ते जिगर!

आज के बाद जो मुश्किल सवाल पेश आए मुझसे मत पूछना मगर दिल की ज़बान से
अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है :

"और अगर वह सब्र करते यहा तक कि आप खुद उन के पास तशरीफ ले आते तो ये उनके लिए बेहतर होता।"

हजरत "'خضر علیہ السلام'" की नसीहत की तरफ तवज्जो दो।
जब आप ने फरमाया था:
"मुझसे किसी चीज़ के बारे मे सवाल न करना यहाँ तक कि मैं खुद आप से उसका जिक्र करू। "

ऐ बेटे!
जल्दी न करना यहाँ तक कि तू खुद उन लम्हो को पा ले फिर तेरे लिए इन्कशाफ़ हो जाए और तू अपनी नज़रो से खुद सीख ले।
मैं अन करीब तुम्हे अपनी निशानिया दिखाऊंगा तो जल्दी न करना
पस मुझसे क़ब्ल अज़-औक़ात सवाल मत करना और इस बात का यक़ीन रखना कि तू वहाँ तक नही पहुंच सकता मगर सलूक से।

इरशाद बारी तआला है:
"क्या उन्होंने जमीन मे सैर नही की ताकि वह देख लेते"

ऐ लख्ते जिगर!

अल्लाह की क़सम! अगर तू सलूक तय कर लेगा तू हर मंजिल मे अजायबात देखेगा। अपनी रूह को उस राह मे फ़ना कर दे। जान की बाज़ी लगा दे क्योंकि उस अमर की असल रूह का फ़ना कर देना है जान की बाज़ी लगा देना है।

जैसे ""حضرت ذوالنون مصری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ"" ने अपने एक शागिर्द से फरमाया था।

अगर तू जान की बाज़ी लगाने पर क़ुदरत रखता है तो आजा बसूरत दिगर अपने आप को सुफिया के तरहात मे मशगूल न कर।

ऐ लख्ते जिगर!

मै तुझे आठ नसीहतें करता हूँ उन पर अच्छे त़रीके से अमल करना कही ऐसा न हो कि कल क़यामत के दिन तेरा इल्म तेरा दुश्मन बन जाए।

उन आठ नसीहतो मे से चार उमूर ऐसे है जिन पर अमल करना लाजमी है। और चार उमूर ऐसे है जिन को तर्क करना जरूरी है। पहले उन चारो उमूर का जिक्र होता है जिन्हे छोड़ देना जरूरी है।

मुनाज़रा न करना:

पहली बात ये है कि

जब तक हो सके किसी से किसी मसअले मे मुनाज़रा व मुजादला ना करना क्योंकि उस मे आफात और मुसीबतें ज्यादा है मुनाज़रा मुजादला का गुनाह उस की नफ़ा से ज्यादा है क्योंकि ये मुनाज़िरा हर क़ाबिले मज़म्म्त खल्क का मम्बा है जैसे रियाकारी ،हसद، तकब्बुर ،कीना، अदावत، और फ़ख्र व मबाहात वगैरह।

इजाज़ते मुनाज़रा:

अगर तेरे दरमियान और किसी और शख्स के दरमियान या तेरे और किसी क़ौम के दरमियान कोई मसअला पेश आ जाए और तेरा दिली इरादा और नियत हो कि हक़ जाहिर कर दिया जाए खामोश रहने से कही हक़ ज़ाया न हो जाए तो बहस करने की इजाज़त है।

लेकिन नियत व इरादा के सही होने की दो अलामते हैं।

(1) हक़ जाहिर होना चाहिए:

इस बारे मे कोई फर्क न हो कि हक़ तेरी ज़ुबान से जाहिर हो या दूसरे की ज़ुबान से।

(2) तुझे ये बात ज्यादा महबूब हो कि:

बहस व मुनाज़िरा ،खलवत व तन्हाई मे हो बानिसबत मजमा के।

मर्ज़े क़ल्ब और उसका इलाज:

मेरी बात को गौर से सुनो

मै यहाँ एक मुफीद बात का ज़िक्र करता हूँ। मुश्किलात के बारे मे सवाल करना ऐसे है जैसे तबीब के सामने दिल की बीमारी पेश करना है और उसका जवाब देना मर्ज़े क़ल्ब की इस्लाह मे कोशिश करना है।

जानना चाहिए

जाहिल लोग ،दिल के मरीज है और उल्मा، तबीब हैं।

नाक़िस आलिम ،सही इलाज नही कर सकता और कामिल आलिम हर मरीज़ का इलाज नही करता बल्कि कामिल आलिम उस मरीज़ का इलाज करता है जिस के बारे मे उम्मीद हो कि ये मआलजा और इस्लाह को क़बूल करेगा। जब बिमारी क़दीमी हो या बांझ का मर्ज़ हो तो वह इलाज को कबूल नही करता तो ऐसे मर्ज़ को दवा देने मे मशगूल होना उम्र ज़ाय करने के मुतरादफ़ है।

मर्ज़े जहालत की अक़साम:

जानना चाहिए कि मर्ज़े जहालत की चार क़िस्में है।
इन मे एक इलाज को क़बूल करती है यानी क़ाबिल ए इलाज बिमारी है और बाक़ी ना क़ाबिल ए इलाज बिमारियाँ है।
ना क़ाबिल ए इलाज बिमारियो मे पहली बिमारी ये है कि
सवाल और ऐतराज़ हसद और बुग्ज़ कि बिना पर हो जब भी तू उसका जवाब बड़े अहसन तरीके से निहायत फ़साहत और वज़ाहत से देगा तो ये जवाब बा सवाब उसमे मजीद बुग्ज़, अदावत और हसद का बाएस बनेगा उस का आसान नुस्खा ये है कि तु उसका जवाब ही न दे

हर अदावत व दुश्मनी के इज़ाले की उम्मीद की जा सकती है सिवाय उस शख्स की अदावत व दुश्मनी के जो तुझसे हसद की बिना पर दुश्मनी करे तो तेरे लिए मुनासिब है कि तू उस से एअराज़ कर ले और उसको उस मर्ज़ के समीत छोड़ दे

अल्लाह तआला का इरशाद है।
तो आप रूखे अनवर फेर लिजिए उस बदनसीब से जो हमारे जिक्र से रूगरदानी करता है और वह फक़्त दुनियावी जिन्दगी का ख्वाहिश मन्द है।
हासिद आदमी से जो कुछ तू कहे या उसके लिए जो कुछ तू करे तो तेरा क़ौल ओ फेअल उस के इल्म की खेती मे मज़ीद आग लगा देगा।
हसद नेकियो को यू खा जाता है जैसे आग खुशक लकड़ियो को खा जाती है।

हिमाक़त:

लाइलाज बिमारियो मे से दूसरी बिमारी ये है कि बिमारी का सबब हिमाक़त हो और ये बिमारी भी ना क़ाबिले इलाज है जैसे

हज़रत "عیسیٰ علیہ السلام" ने फरमाया है:

मै मुर्दो के जिन्दा करने से आजिज़ नहीं लेकिन अहमक़ के इलाज से आजिज़ हू।
ऐसा अहमक़ आदमी थोड़ा अर्से इल्म मे मशगूल रहता है और उलूमे अक़लिया और उलूमे शरिया मे से बहुत कम सीखता है फिर वह अपनी हिमाक़त और सफ़ाहत के सबब आलिमे कबीर जिस ने अपनी उम्र अजीज उलूम ए अक़लिया व शरिया की खिदमत मे सर्फ कर दी होती है पर सवालात शुरू कर देता है और ऐतराज़ात करने लगता है।ये अहमक़ इल्म से बे बहरा है और उसका गुमान है जो चीज़ के लिए मुश्किल है वह आलिमे कबीर के लिए भी मुश्किल है ।
तो जब उस अहमक़ को इतना भी इल्म नही होता तो उसका सवाल हिमाक़त पर मबनी होता है। तो बेहतर और मुनासिब ये है कि ऐसे अहमक़ के सवाल का जवाब ही न दिया जाए। इन लाइलाज बीमारियो मे ऐसे मरीज़ का मर्ज़ भी है जो तालिब तो है(लेकिन तक़ादा हाये तलब से महरूम है) अकाबिर ،बुजुर्गो के कलाम मे से जो उसे समझ न आए तो उसे अपनी नाक़िस फ़हम के मुताबिक समझता है(और गुमराह हो जाता है।) उसका सवाल तो इस्तफादह के लिए है लेकिन उसके बलीद नाक़िस अक्ल होने की वजह से वह हकायक़ का इदराक नही कर सकता। पस ऐसे आदमी को जवाब देने मे भी अपना वक़्त ज़ाय नही करना चाहिए।

क़ाबिले इलाज मर्ज़:

वह मर्ज़ जो क़ाबिल ए इलाज है उस आदमी का मर्ज़ है जो तालिब ए रुश्द ओ हिदायत हो، आक़िल हो ،मुआमला फहम हो और वह हसद ،गज़ब، शहवत ،मनसब व जाह और माल की मोहब्बत मे मगलूब न हो।

वह सिरात ए मुस्तकिम का तालिब हो।
उसका सवाल ऐतराज़, हसद नीचा दिखाने और इम्तिहान की गर्ज से न हो ऐसे आदमी का मर्ज़ क़ाबिल ए इलाज है
पस मुनासिब है ऐसे शख्स के सवालात का जवाब दिया जाए बल्कि ऐसे आदमी के सवालात का जवाब देना वाजिब है।

वाइज़ न बनना:

ऐसे उमूर जिनको तर्क करना ,छोड़ देना जरूरी है उन मे दूसरा ये है कि तू इस बात से डरे और इज़्तेनाब करे कि तू वाइज़ और पन्द व नसीहत करने वाला बने क्योंकि इस की आफात बहुत ज्यादा है।

वअज़ की इजाज़त:

हाँ वअज़ की उस वक्त इजाज़त है जब तू जो कहे या बयान करे पहले खुद उस पर अमल कर फिर लोगो को वअज़ व नसीहत कर "हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम" से जो फरमाया गया उस मे खूब गौरो फिक्र कर।

ऐ इब्ने मरयम!
पहले अपने नफ़्स को वअज़ व नसीहत करो अगर ये नफ़्स वअज व नसीहत पर अमल कर गया तो अब लोगो को वअज़ व नसीहत करो वर्ना
अपने रब से हया करो
अगर कंधो पर वअज़ व नसीहत की जिम्मेदारी आ पढ़े तो दो बातो और खस्लतो से इज़्तेनाब करना।

वअज व नसीहत मे तसन्नो और बनावट से इजतेनाब करना खुश कुन इबारात व इशारात से परहेज़ करना राह हक़ से दूर नाम निहाद सुफ़ियो की बे सरोपा बाते बयान करने से बचो और फिज़ूल शेर-ओ-शायरी से भी दामन बचाकर रखो। क्योंकि अल्लाह तआला तसन्नो और बनावट करने वालो को नापसंद फरमाता है कलाम मे तसन्नो और हद से तजावज़ बातिन के खराब होने और दिल की गफ़लत पर दलालत करता है।

तज़कीर व वअज:

बन्दे का आखिरत की आग को याद करना खालिक की खिदमत व इबादत मे अपने नफ़्स की कोताहियो को मद्देनजर रखना अपनी गुज़री हुई उम्र जो उस ने लायानी कामो मे बर्बाद कर दी मे गौरो फिक्र और पेश आने वाली दुश्वार गुजार मंजिलो मे गौर करना।

अगर इमान पर खात्मा ना हुआ तो क्या बनेगा?

मल्क - उल - मौत की जान निकालने की कैफियत कैसी होगी?

क्या वह मुन्कर नकीर के सवालो के जवाबात बताने पर कुदरत रखता है?

कयामत और मवाक़फ कयामत मे जो उस की हालत होगी क्या उस मे बेहतरी का अहतमाम व इन्तज़ाम कर लिया है?

क्या वह सही व सालिम पुल सिरात को उबूर कर जाएगा या हावया मे गिर जाएगा?

पस बन्दे के दिल मे इन चीज़ों की याद लगातार आती रहे और उसे बेकरार करती रहे।

उस आग का जोश मारना और उन मसायब व आलाम के नोहा को तज़कीर कहा जाता है। अल्लाह की मखलूक़ात को खबर देना और उन अशया पर मुतलआ करना

उनकी कोताहियो और उन के इफ़रात व तफ़रीत पर उन्हे मुतनब्बे करना और उन उयूब को उनकी नज़रो के सामने कर देना ताकि उस आग की हरारत अहले मजलिस को पहुंचे और ये मसायब व आफ़ात उन्हे बेकरार कर दें ताकि वह हस्ब ए तौफ़ीक गुज़री हुई उम्र का तदराक कर सके और वह दिन जो अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमांबरदारी के बगैर गुज़र गये उनके लिए बाइस ए हसरत और पशेमानी हो

ये तमाम आशिया इस तरीक़े पर वअज कहलाता है

तुम्हारी क्या राये है इस बारे मे के दरया मे तुगयानी हो और तुगयानी का रूख किसी अज़ीज़ के घर के जानिब हो और वह अज़ीज़ और उस के अहल ए खाना घर मे मौजूद हो तो तू उस लम्हा कहे- बचो - बचो दरया की खूंखार लहरो से भाग जाओ।

क्या इस ना गहानी आफ़त के वक्त तेरा दिल ये चाहेगा कि तू अपने अज़ीज़ को पुर तकल्लुफ इबारात ,फ़सीह व बलीग नुकात व इशारात से खबर दे यकीनन तेरा दिल ऐसा नही चाहेगा। पस यही हाल वाइज़ का है उसे भी चाहिए कि उन बातो से यानी पुर तकल्लुफ इबारात मसजअ व मक़फअ कलाम और फ़सीह व बलीग नुकात से इजतनाब करे।

दूसरी खसलत:

तेरे वअज व नसीहत मे तेरा इरादा और ख्वाहिश ये ना हो कि लोग तेरी मजलिस मे दौड़ कर आए वजद ज़ाहिर करे कपड़े फाड़े फिर ये कहा जाए ये मजलिस बहुत अच्छी है क्योंकि ये सब दुनिया के निशान-ए-राह है और रियाकारी की अलामात है और ये चीज़ हक से

गाफ़िल होने की बिना पर पैदा होती है बल्कि मुनासिब ये है कि तेरा अज़्म व हिम्मत हो कि तू लोगो को बुलाए दुनिया से आखिरत की तरफ गुनाह से इताअत की तरफ हिर्स व लालच से ज़ुहद व बेरगबती की तरफ बुख्ल से सखावत की तरफ गरूर व तकब्बुर से तकवा व तहारत की तरफ और तू उनके दिल मे आखिरत की मुहब्बत डाल दे और दुनिया को उनकी नज़रो मे क़ाबिल ए नफ़रत बना दे और तू उन्हे इबादत व ज़ुहद के इल्म से आरास्ता कर दे क्योंकि इन्सानी तबियतो मे गलबा शरीयत मुतहरा की सीधी राह से फिरने का और उन उमूरमे कोशिश करने का जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का बाइस बनती है और रद्दी और बेहूदा आदात व एतवार मे मशगूल होने का उन अहवाल मे तुझ पर लाज़िम है कि तू उनके दिलो मे हैबत डाल दे
उन्हे डरा और उन्हे खबरदार कर उन खौफनाक बातो से जो उन्हे पेश आने वाली है। ऐसा करने से शायद उनके बातिन की सिफ़ात मे तब्दीली रून्मा हो और उनके ज़ाहिर का मुआमला भी तब्दील हो और वह अल्लाह की इत़ाअत मे हिर्स व रगबत का मुज़ाहिरा करे और गुनाह व ना फरमानी से रुजू का इज़हार करे यही वअज व नसीहत का तरीका है। हर वह वइज़ जो ऐसा न हो वह वअज़ कहने वाले के लिए और हर सुनने वाले के लिए वबाल है। बल्कि यहा तक कहा गया है कि वह मुख्तलफ रंग बदलने वाला जिन और शैतान है जो मखलूक को सिरात़ ए मुस्तक़ीम से दूर कर देता है और उन्हे हलाकत के घड़े मे फेक देता है।
पस लोगो पर लाज़िम है कि वह वअज कहने वाले से दूर भागे क्योंकि उस किस्म की बात कहने वाला उनके दीन मे इस तरह फ़साद पैदा कर देगा कि शैतान भी उस जैसा फ़साद पैदा नही कर सकता।
जिसके बाजुओं मे क़ुव्वत व ताक़त हो उस पर वाजिब व लाज़िम है कि वह ऐसे शख्स को, मुसलमानो के मिम्बर से नीचे उतार दे और उसे रोक दे उन उमूर से जो वह सर अन्जाम देता है।
क्योंकि ऐसा करना "امر بالمعروف اور نہی المنکر" के जुमरह मे दाखिल है।

उमरा और सलातिन से मेलजोल रखना:

ऐसे उमूर जिनको तर्क करना ज़रूरी है उन मे तीसरा अमर ये है , उमरा और सलातिन से राह व रस्म ना रखा जाए और तू उनको देखना भी गवारा ना करे क्योंकि उनका देखना, उनकी हम नशीनी और उन से राह व रस्म और रवाबत बहुत बड़ी आफ़त है अगर तू उन उमूर मे से किसी मे मुब्तिला हो जाए तो उनकी मदह व सना से अपने आप को दूर रख क्योंकि अल्लाह तआला गज़ब मे आता है जब फ़ासिक़ व ज़ालिम की तारीफ व तौसीफ की जाए और जिस ने उन ज़ालिम उमरा की दराज़ी ए उम्र की दुआ की तो उसने अपने अमल से उस बात को पसंद किया कि ज़मीन मे अल्लाह की ना फरमानी की जाए।

उमरा के हदियता और अतया को क़बूल न करना:

ऐसे उमूर जिनका तर्क करना लाज़िम है उन मे चौथा अमर ये है कि अमरा के अतयात और उन के हदया को क़बूल न किया जाए और अगरचे तुझे इल्म है कि ये माल हलाल है क्योंकि उनकी जानिब से तमअ व हिर्स दीन को बर्बाद कर देती है क्योंकि उससे मदाहत पैदा होती है उन के जानिब रिआयत और उनके ज़ुल्म मे मुवाफ़क़्त पैदा होती है।

ये सब कुछ दीन मे फ़साद है उसका कम से कम नुकसान ये है कि जब तू उन अतयात और हदाया को क़बूल कर लेगा और उन की दुनिया से नफ़ा व फायदा हासिल कर लेगा तू लाज़िम उनसे मोहब्बत करेगा और जो किसी से मोहब्बत करता है उसकी दराज़ी ए उम्र का ख्वाह होता है और ज़रूर उस की बक़ा का तलबगार होता है , और ज़ालिम की बक़ा मे मोहब्बत करना अल्लाह की मखलूक पर उसके ज़ुल्म का इरादा करना है और कायनात को बर्बाद करने का इरादा करना है।

पस कौन सी चीज़ है जो उस से ज़्यादा दीन व आकबत को ज़रर पहुचाने वाली हो और बचो बचो उस बात से कि तू धोखा खा जाए। शैतान की फ़रेब कारियों से और बचना कही धोखा न खा जाना बाज़ लोगो की उस बात से कि अफ़ज़ल व औला ये है कि तू उनसे दिरहम व दीनार वसूल करे और उसे तक़सीम करे फ़ुकरा और मसाकीन के दरमियान क्योंकि ये लोग माल खर्च करते है फिस्क़ और नफरमानी मे तेरा ज़ईफ़ और कमज़ोर मुसलमानो को माल व दौलत खर्च करना उन असहाबे मासियत पर खर्च करने से बेहतर है ।

क्योंकि शैतान लइन ने इस वसवसा से बहुत से लोगो की गर्दनो को काट कर रख दिया यानी उन्हे फाँसी पर लटका दिया गया।

और भी बहुत सी आफ़ात है जिन्हे हमने अहया अल उलूम अल दीन मे ज़िक्र कर दिया पस उन उमूर को वहां तलाश करो

अब उन चार उमूर का ज़िक्र होता है जिन का करना तेरे लिए बहुत मुनासिब है।

अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करना:

वह उमूर जिनको सर अन्जाम देना ज़रूरी है उन मे पहला ये है कि तू अपने तमाम मुआमलात को अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दे उस हैसियत से कि अगर तेरे साथ वही मामला तेरा गुलाम करे तो उस मामले मे उस से राज़ी हो जाए और तेरा दिल उस पर तंग न हो और न तुझे गैज़ व गज़ब आए।

और वह बात जिसे तू नापसंद करता है कि तेरा मजाज़ी गुलाम तुझसे करे ऐसी बात अल्लाह तआला के लिए भी करने से खुद बाज़ रह क्योंकि अल्लाह तआला तो तेरा हक़ीक़ी आक़ा है।

जो अपने लिए पसंद है लोगो के लिए भी वही पसंद करो:

दूसरी बात ये है कि -
जब भी तू लोगो से मुआमला तय करने लगे तो उनसे इस तरह बर्ताव कर जिस तरह तू चाहता है कि वह तेरे साथ बर्ताव करे।
क्योंकि
बन्दे का ईमान उस वक्त तक मुकम्मल नही हो सकता जब तक वह तमाम लोगो के लिए वही पसंद न करे जो खुद अपने लिए पसंद करता है।

आखिरत संवारने वाला इल्म हासिल करो:

तीसरी बात ये है कि:
जब तू कोई इल्म हासिल करना चाहे या किसी किताब का मुताला करना चाहे तो तेरा इल्म व मुताला ऐसा होना चाहिए जो तेरे दिल की इस्लाह करे और तेरे नफ़्स को तय्यब व ताहिर कर दे।
जैसे
अगर तुझे मालूम हो जाए कि तेरी उम्र सिर्फ एक हफ्ता है तो लाज़मी बात है कि तू उस वक्त इल्म ए फिक़्हा व खिलाफ ,इल्मे उसूल व कलाम और इन जैसे उलूम मे हरगिज़ मशगूल नही होगा क्योंकि तुझे इल्म है कि ये उलूम अब तुझे कोई फ़ायदा ना देंगे। बल्कि
तू अपने दिल की निगरानी मे मशगूल हो जाएगा
अपने नफ़्स की सिफ़ात को पहचानेगा।
तअल्लुक़ात ए दुनिया से मुँह मोड़ लेगा अपने नफ़्स को मजमूम अख्लाक से पाक कर लेगा और अल्लाह तआला की मोहब्बत और उस की इबादत मे मशगूल हो जाएगा और अपने नफ़्स को औसाफ ए हुस्ना से मुतस्सफ़ करेगा।
अलगर्ज़
बन्दे पर कोई दिन और रात ऐसा नही गुज़रता मगर उस बात का इमकान है कि उस मे उस की मौत वाकई हो जाए।

ऐ लख्त जिगर!

मुझसे एक और बात सुनो और उस मे खूब गौरो फिक्र करो इतना गौरो फिक्र करो कि तुझे निजात की राह मिल जाए।
अगर तुझे इत्तेलाअ दी जाए बादशाहए वक़्त एक हफ्ते के बाद तुझसे मिलने के लिए आ रहा है।
तो मुझे मालूम है और मैं खूब जानता हू कि तू इस अरसे मे जिस जिस जगह बादशाह की नजर पड़ सकती है उस की इस्लाह और दुरुस्तगी मे मशगूल हो जाएगा मसलन तू कपड़े साफ करेगा، बदन की देखभाल करेगा।घर को आरास्ता करेगा और बिस्तर साफ सुथरा करेगा।
अब गौरो फ़क्र कर मे ने किस जानिब इशारा किया है तो तू बड़ा फ़हीम और समझदार है दाना व बीना के लिए तो एक ही बात काफ़ी है हुआ करती है
हुजूर "ﷺ" ने इरशाद फरमाया:
अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे ज़ाहिरी आमाल को नही देखता बल्कि उसकी नजर तो तुम्हारे दिलो और तुम्हारी नियतो पर है
अगरचे तू अहवाल ए क़ल्ब के इल्म का इरादा रखता है तो इहया उल उलूम वगैरह मेरी तसनीफ़ात का मुताला करो ये इल्म ،इल्म अहवाल क़ल्ब फर्ज़े ऐन है और उसके अलावा बाकी उलूम का हसूल फर्ज एं किफाया है मगर इतनी मिक़्दार फर्ज़ है जिसके ज़रिए अल्लाह तआला के फ़राइज अदा किए जा सकें।
अल्लाह तआला इतनी तौफ़ीक अता फरमाए कि तू इल्म ए अहवाल ए क़ल्ब हासिल कर ले।

बक़्द्रे ज़रूरत रोज़ी रखो:

चौथी बात ये है कि

एक साल से ज़्यादा घर मे अनाज न रखना(ये एक साल भी इस लिए कि बन्दा दिलजमी से अल्लाह तआला की इबादत मे मशगूल रहे) जैसे "حضور ﷺ" अपनो के बाज़ हुजरात के लिए ऐसा करते थे "حضور ﷺ" का इरशाद गिरामी है:

ऐ "اللہ آل محمد ﷺ" की रोज़ी इतनी रखना जितनी उन्हे ज़रूरत हो (जरूरत से ज्यादा नही)

आप अपनो के तमाम हुजरात के लिए ऐसा न करते थे बल्कि आप की अजवाज़ ए मुतहरात मे से जो यक़ीन की खसुसी दौलत से मालामाल थीं(जैसे "حضور ﷺ (ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا" उनके लिए दिन बल्कि आधे दिन से ज़्यादा का अहतमाम ना फरमाते थे।

ऐ लख्ते जिगर!

मैंने इस रिसाले मे तेरे सवालो के जवाबात लिख दिए है अब तेरे लिए यही मुनासिब है कि तू उन पर अमल करे

एक और अहम बात कि अपनी नेक और सालेह दुआओ मे मुझे याद रखना न भूलना ऐ मेरे बेटे तूने ये लिखा मै तेरे लिए कोई दुआ लिख भेजूं।

दुआयें अहादीस ए मुबारक की कुतब ए सहीह मे बेशुमार है वहा से तलाश करो। एक दुआ लिखता हू उस दुआ को अपने क़ीमती लम्हात मे पढ़ो खसुसन नमाज़ो के बाद इन अल्फ़ाज से अल्लाह तआला की बारगाह मे दुआ मांगो।

ऐ अल्लाह मे तुझसे तेरी नेमतो का सवाली हू अधूरी नेमतें नही मुकम्मल नेमते अता फरमा

मै तुझसे गुनाहो से पाक व साफ होना मांगता हू दिन दो दिन के लिए नही बल्कि हमेशा हमेशा के लिए
मै तुझसे रहमत माँगता हूँ जो मेरे तमाम उमूर व मुआमलात को शामिल हो।
मै तुझसे आफियत माँगता हू जो हमेशा मुझे हासिल रहे
मै तुझसे खुशहाल जिंदगी मांगता हूँ
सआदतो से लबरेज उम्र ए तवील माँगता हूँ
कामिल व मुकम्मल अहसान माँगता हूँ
अमूमी इनआम व इकराम माँगता हूँ
तेरे फ़जलो करम से मीठे और शीरी फज़ल का सवाली हु
ऐसे लुत्फ का सवाली हू जो तेरी बारगाह के और करीब करदे
ऐ अल्लाह तू हमारा हो जा
तू हमारे बर खिलाफ न होना
हमारी ज़िन्दगियो का इख्तेताम सआदत व नेक बख्ती से करना
हमारी उम्मीदे पूरी कर दे बल्कि उम्मीदो से बढ़कर अता फरमा
हमारी ज़िन्दगियों की सुबहे ,हमारी ज़िन्दगी की शामे आफियत से हमकिनार फरमा
हमारा अन्जाम व इख्तेताम अपनी रहमत की जानिब फरमा
हमारे गुनाहो की सियाही पर अपने अफ्व मगफिरत के बड़े बड़े डोल उंडेल दे
हमारे उयूब की इस्लाह फरमा कर हम पर अहसान फरमा
तक़वे को हमारा ज़ादे राह बना
हमारी जिन्दगी की सारी कोशिश अपने दीन की खिदमत मे सर्फ फरमा
ऐ अल्लाह तेरी ही ज़ात पर हमारा तवक्कुल और हमारा भरोसा है
ऐ अल्लाह इस्तकामत की शाहराह पर साबित क़दम रखना
दुनिया मे हमे ऐसे कामो से बचाए रखना जिनके सबब कयामत को नदामत उठानी पड़े गुनाहो का बोझ हम से हल्का करदे
हमे नेक और सालेह लोगो जैसी जिन्दगी अता फरमा
ऐ अल्लाह तू हमे काफी हो जा

हमसे शरीर लोगो के शर को दूर फरमा
हमे हमारे आबा व अजदाद को हमारी माओ बहनो को और हमारे मशायख कराम को जहन्नुम की आग के अज़ाद फरमा
ये सब कुछ रहमत व करीमी से अता फरमा

یاعزیز	یاغفار```
یاکریم	یاستار
یاحلیم	یاجبار
یااللہ	یااللہ
یااللہ	یااللہ
یارحیم	یارحیم
یارحیم	الراحمین
یااول الاولین	یاآخرالاخرین
یازالقوت متین	یاراحم المساکین
یاارحم الراحمین	

```محمد کریم سلطانی
```

नसीहत करना आसान है और उस पर अमल करना मुश्किल है क्योंकि ख्वाहिशाते नफ्स के पैरो कार का मिजाज़ कड़वा होता है। (और हक़ बात उसे कड़वी महसूस होती है) जिन बातों के करने से अल्लाह ने मना फ़रमाया है। उसे इन बातों का करना बड़ा पसंद होता है खुसूसन वह आदमी इस मर्ज में ज्यादा गिरफ्तार है जो रस्मी उलूम का तालिब अपने नफ्स की शान बढ़ाने में मशगूल और मनाक़िबे दुनिया के हुसूल में मगन है क्योंकि वह इन गुमाने फासिदा में मुबतिला है कि सिर्फ इल्म का हुसूल उस की निजात और अज़ाबे इलाही से बचने के लिए काफी है और उसे शरीयते मुताहरा पर अमल की कोई ज़रूरत नही और ये एअतक़ादे फासिद फलसफा का अक़ीदा है।

-इमाम ग़ज़ाली

FALAAH RESEARCH FOUNDATION